International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ज्ञान सिंह मान के साहित्य में पूंजीवाद विमर्श

डॉ संगीता शर्मा ,
एसोसिएट प्रोफेसर ,हिंदी ,
दयानंद कॉलेज, हिसार

भोध सारां।

आज विश्व दो परस्पर विरोधी शक्तियों में बांट गया है एक तो शोषित वर्ग जो कि साधनहीन है दूसरा वर्ग अल्पसंख्यक है जो कि साधन संपन्न है। अल्पसंख्यक वर्ग सर्वहारा वर्ग का निरंतर शोषण करता रहता है जिससे दोनों में संघर्ष होता रहता है। मजदूर मूल्य की रचना करता है, मालिक उस सरप्लस वैल्यू को अपना लाभ समझकर अपने पास रख लेता है जो कि यह अतिरिक्त मूल्य मजदूरों द्वारा निर्मित है। यहां कार्लमार्क्स ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि पूंजीवादी व्यवस्था में यह स्वाभाविक है कि मालिक मुनाफ कर जिस धन पर मजदूर का अधिकार है उसे हड़प जाएं। जब मजदूर अपना हक मांगता है तो मालिक उसका शोषण करता है। फलस्वरूप दोनों में टकराव होता है।

मूल भाब्द : कार्लमार्क्स, सरप्लस वैल्यू, पूंजीवादी व्यवस्था, साहित्य का मूलाधार, सिद्धांत–संस्थापक ।

प्रस्तावना

डॉ. ज्ञान सिंह मान जी के 'जलते कलश' में प्रदीप शाषितों के हक के लिए लड़त है और शोषकों से टक्कर लेता है–

''तुम जानते ही हो, हमें अपनी टी–एस्टेट के लिए एक 'इकनॉमिक एडवाईजर' की आवश्यकता है। एस्टेट पर हर दूसरे–तीसरे दिन हड़तल होती रहती है। हर समय एक ही मांग 'वेतन बढ़ाओ या एस्टेट छोड़ दो' वहां की 'लेबर' समस्या हल करने के लिए ही हमें यह पोस्ट–''

तनिक सोचकर चेयरमैन ने मेज पर रखी फाइल उठा ली, एक दो पृश्ठ उलटते ही सिगरेट की राख को झाड़ते के लिए उसे नीचे झुकना पड़ा। ध्यान सभंवतः अब भी प्रदीप की ओर ही था। फाइल पर नेत्र पूर्ववत स्थिर थे, केवल आंठ ही कुछ कह रहे थे।

साहित्य में इस दशन को 'मानविकी पारिभाषिक कोश' में कहा गया है–'' यही वर्ग संघर्ष आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक परिस्थितियों का आधार है। इसलिए साहित्य का मूलाधार भी वर्ग संघर्ष, आर्थिक, सामाजिक ही है, क्योंकि साहित्य समाज की सामूहिक चेतना है, साहित्यकार की वैयक्तिक चेतना नहीं।''1 कार्लमार्क्स ने स्वीकार किया है कि श्रमि अपनी आय से अधिक सरप्लस वैल्यू का भी उद्घाटन करता है। पूंजीवादी व्यवस्था में श्रमिक का यही शोषण होता है। मार्क्सानुसार पूंजीवादी व्यवस्था शोषण पर आधारित है। मजदूर की मजदूरी उसकी श्रम के के बराबर नहीं होती। अतः मजदूर जितने कार्य का जितना मूल्य पाता है उसके अंतर को कार्लमार्क्स अतिरिक्त मूल्य का सरप्लस वैल्यू कहता है।

'' तुमने 'एप्लीकेशन' में लिखा है कि 'लेबर प्रॉब्लम' पर तुम्हारी विशेष 'मास्टरी' है। हमारी टी–एस्टेट की समस्या के संबंध में तुम्हें क्या कहना है।''

''सर–''

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रदीप न नेत्र झुकाते हुए तनिक संशयात्मक ढंग से कहा–

'' क्या बिना जल के मुझे तैरने की मुद्रा बनानी होगी? बुरा मत मानिए, समस्या का विधिवत अध्ययन किए बिना मेरे लिए कुछ भी कहना कठिन है और फिर यह असंगत भी तो–''2

प्रदीप शोषितों को हक दिलवाने के लिए अपनी नौकरी की भी परवाह नहीं करता।

'खुलते–बंद सीप' उपन्यास में जतिन शोषितों का साथ देता है और उनकी आवाज ऊपर तक पहुंचाता है–

'' शोषित–शोषक वर्ग की बढ़ती दूरी मानवतावादी सिद्धांत–संस्थापकों के प्रयास के कारण और भी बढ़ती जाती है। कितने ही अभावग्रस्त श्रमिक सीकरों से मिलों की चिमनियों को उज्ज्वल करने का संकल्प लेते जा रहे हैं। दीन एवं हीन मानतवा निरंतर अपने ही संकीर्ण मनोभावों की दास बनी भयंकर विस्फोट का मार्ग पाने में सचेष्ट है। कहां कोई मूक वेदना अपना अस्तित्व बिसार गई, किसी को नहीं पता दूर किसी जर्जरित कुटीर में स्वच्छ जल के कूप सूख कर आंखों का जल खींच लाते हैं, बहुत दूर कहीं सदानंद ने क्रूर कठोर मानव के काम का जाल फैलता जा रहा है– जाल, हां–हां जाल ही दो दंभ का जाल, मोह–माया और अहमन्यता का जाल। फैलता ही जाता है, और निपट–निरीह मानवता अपने तीख तेज दांतों से उसे काटने का विफल प्रयास कर रही है। प्रपंच है, कुछ लोग अपने चाटुकार समर्थकों के कारण ही देश के भाग्य–निर्माताओं का उपहास रचते हैं। हड़ताल, विस्फोट, प्रलय–कब इसका अंत होगा, जागृत मानवता को कब उसका अधिकार मिलेगा? सदानंद जैसे शोषकों से अपनी आहों का समुचित पुरस्कार पा लेना क्या सर्प–मस्तक से मणि चुराने के बराबर नहीं होगा।''3

पूंजीपति वर्ग मजदूरों का हक खाने के लिए हमेषा तैयार रहता है। वह मजदूरों की मजदूरी नहीं समझता। डॉ. ज्ञान सिंह मान अपने समय के सजग साहित्यकार थे। उन्होंने इस व्यवस्था को देख अपने साहित्य में व्यक्त किया। डॉ. मान ने शोषितों पर कड़ा प्रहार किया है।

शोषक वर्ग से तंग होकर मजदूर हड़ताल करने के लिए मजबूर होता है। राजेष के माध्यम से उपन्यास 'खुलते बंद सीप' में इसी स्थिति का चित्रण हुआ है–

''साथियो–हड़ताल करने पूर्व–'' अभी राजेश कह नहीं पाया था कि असंख्य अशांत और प्रखर स्वर 'राम राज्य मिल की दीवारों से टकरा–टकरा कर षून्य की ओर बढ़ने लगे– गगन मानो चीत्कार कर उठा, एक साथ असंख्य ध्वनियां, अनेक स्वर, अगणित बंधन–

''नहीं, हम कुछ नहीं सुनेंगे।''

''राजेष बाबू आप हट जाइए।''

''चले जाओ, अब सदानंद का दिवाला पिटकर ही रहेगा।''

''हां–हां हम मिल को आग लगा देंगे।''

''हमें अपने पसीने का हक चाहिए।''

''मजदूर संघ–'' ''जिंदाबाद।''

दूर किसी कोने से जैसे गाज गिरी–

''इस बहरूपिए की बात मत सुनो, इसे सेठजी ने भेजा है– यह 'टाऊट' है, खरीदा हुआ हथियार।''

'''हां, हां– इसे भी मार डालो– संदानंद के साथ ही एक और कब्र खोदनी होगी।'

''एक नहीं– दस–दस चिताएं जलानी होंगी।''

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और राजेष की ष्वास तेज हो गई, वैसा तिरस्कार तो उसने अपने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था। कली छलना थी– उसकी नसें खिंच उठी, नेत्रों के आगे एक लालवर्ण गोलाकार बवंडर उठने लगा, एक ऊंचे स्थान पर पांव रखता हुआ वह सिंनाद कर उठा–

'हां, हां, तुम ठीक कहते हो– हमें मार डालो, जीवित कब्रों में गाड़ दो आओ, मैं कहता हूं, उठाओ हाथ– यह रहा मेरा सोना, मेरा वक्ष।''

और राजेष अपनी कमीज फाड़ देता है। लोम–रंजित वक्ष चमक उठा, छाती की धड़कन स्पष्ट थी– 'सोच क्या रहे हो, आगे मैं समझा, आप लोग केवल निर्माता नहीं हैं, देश की नग्न मानवता का फटा गौरव सीने वाले श्रमिक ही नहीं– हिंसक, विध्वंस और राक्षस भी हैं। देख क्या रहे हो, आगे क्यों नहीं बढ़ते, यदि मेरे और सेठजी के रक्त से ही आपकी जठराग्नि शांत हो सकती है।''4

इस भौतिकवादी समय में हर कोई गरीबों का शोषण कर रहा है। इस पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के कारण अमीर और अधिक अमीर हो रहा है और गरीब और अधिक गरीब। अमीर पूरा ऐषो–आराम करते हैं जबकि बद्तर जीवन जीवने को मजबूर हैं। वह भूखा–प्यासा खुले आसमान के नीचे फुटपाथ पर सोने को मजबूर है।

डॉ. ज्ञानसिंह मान ने मृगतृष्णा उपन्यास में मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ता है, वह संपादक है। अखबार के द्वारा वह रेखा के पिता को भी नहीं छोड़ता और मजदूरों को उनका हक दिलवाकर ही रहता है–

'' अभी उसे संपादक के रूप में काम करते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि एक दिन जबकि वह अपने दफ्तर में बैठा कुछ लिख रहा था, एक अठारह वर्षीय युवक ने उसके दफ्तर में प्रवेष किया। अजय ने उस युवक का पहले भी कहीं देखा था। मस्तिष्क पर कार्य की अधिकता ने कुछ अजीब से तंतु पैदा कर दिए थे। अजय को किसी भी पूर्व घटित घटना को स्मरण करने के लिए दिमाग पर बल देना पड़ता था। यह युवक चाल–ढाल और बोल–चाल से साधारण श्रमिक से अधिक कुछ नहीं लगता था। अजय के पास वह संभवतः कोई राम कहनी लेकर आया था। अभी अजय उसे पहचानने का प्रयास ही कर रहा था िकवह उसके पास आकर हाथ जोड़त हुआ बोला–

'अजय बाबू, आपके होते, हम गरीबों की मजूरी मारी जाए। यह तो पाप होगा। इधर मैंने दो महीने सेठ जी के घर बतन धोए, खाना बनाया। आज मुझे एक महीने की बेगार देकर उन्होंने निकाल दिया, माई–बाप, आप तो अखबार छापे हो। यह कौन सा इंसाफ हुआ–?'

अजय ने उसको ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछा,

'तुम किस सेठ जी की बात करते हो?'

'वाह अजय बाबू आप भी कमाल करते हो। मुझे नहीं पहचाना, मैं हूं रामजस, वो सेठ रेखा के पिता, उनकी बात करता हूं। भैया इन हाथों ने तो आप को खाना खिलाया है–'

कुछ ही क्षणों में अजय को सारी स्थिति का ज्ञान हो गया। रामजस को उसने अपने एक मित्र की चिट्ठी भी लेकर दी थी। परंतु सेठ कांता प्रसाद तो बहत बड़े आदमी हैं। इस बेचारे के साथ इस तरह का व्यवहार–' अजय ने कुछ सोचकर कहा,

'परंतु उन्होंने तुम्हें नौकरी से अलग करते हुए कुछ कहा तो होगा?'

'नहीं भैया, का कहना। सुसरा उनका मैनेजर कोई अपना आदमी रखने को बोले–'

'ओ, अब समझा–' अजय ने कुर्सी पर पीठ टेककर कहा,

'परंतु उन्होंने तुम्हारी तनख्वाह क्यों नहीं दी–'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रामजस कुछ गिड़गिड़ाकर बोला,

'उनकी मर्जी ठहरी। हम गरीबन की कौन सुने। कहते थे तुमने जो बर्तन तोड़े उनके पैसे तुम्हारी तनख्वाह से पूरे हो गए हैं–''5

लेखक उपन्यास के माध्यम से बताया कि किस प्रकार पूंजीपति तथा शोषक वर्ग श्रमिकों तथा जनता का शोषण व दमन करते हैं। पूंजीपतियों को शोषितों पर कोई तरस नहीं आता वे मजदूरों की मजदूरी हड़प जाते हैं। मजदूरों को उनकी पूरी मजदूरी न मिलने के कारण वे बदहाल जीवन जीने को विवश हो जाते हैं और वह विद्रोह कर देता है। इन दोनों वर्गों में संघर्ष होता रहता है। डॉ. ज्ञान सिंह मान कहते हैं कि श्रमिकों को उनका पूरा हक देकर आर्थिक मूल्यों की रक्षा तथा स्वयं की मानवता का उदाहरण देना चाहिए और श्रमिकों का शोषण व दमन बंद करना चाहिए जिससे ये दोनों आपस में मिलकर काम कर सकें। इससे देश में गरीब व भूखमरी की समस्या लगभग समाप्त हो जाएगी। अपने साहित्य में आर्थिक–मूल्यों का वर्णन करके के पीछे लेखक का यही उद्देश्य है।

भारत में निर्धनता की समस्या बहुत बड़ी समस्या है। जिस कारण देश के विकास में रूकावट पैदा हो रही है। निर्धनता कोई ईश्वर की देन नहीं है बल्कि यह धन के अभाव में उत्पन्न होती है जो कि सामाजिक समस्या भी है। ''निर्धनता का तात्पर्य एक ऐसे अभावग्रस्त जीवन से है जो समाज को सामाजिक–आर्थिक कुसमायोजन से उत्पन्न होता है तथा जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपनी तथा अपने आश्रितों की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है।''6

समाजशास्त्र के अनुसार जिस व्यक्ति के पास भोजन, कपड़ा और मकान अर्थात जीवन की प्रारंभिक आवश्यकताएं न हों या जीवन की आवश्यकताएं, सुविधाएं और मनोरंजन के साधन नहीं हैं उस व्यक्ति को हम निर्धन कह सकते हैं।

इन चीजों का अभाव धन की कमी से होता है। धन सुविधाएं पाने का सबसे बड़ा साधन है। जिन सुविधाआं का अमीर आदमी उपभोग करता है। ''निर्धन व्यक्ति तो आज भी इन सुविधाओं के नाम भी नहीं जानता।''7

डॉ. ज्ञान सिंह मान ने अपने साहित्य में निर्धनता का वर्णन किया है। 'खुलते बंद सीप' उपन्यास में राजेष की निर्धनता का चित्रण किया गया है कि प्रकार एक साधारण और निर्धन परिवार से आकर राजेश अपनी पढ़ाई पूरी कर रहा है, वह अपनी गरीबी को किसी पर भी प्रकट नहीं करता–

'' राजेश के संबंध में इतना ही ज्ञात हो पाया कि वह रोहतक का रहने वाला था। एक छोटी बहन और बूढ़ी मां के अतिरिक्त किसी तीसरे निकट संबंधी का पता नहीं चल सकता है। सत्यपाल ने बताया राजेष की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी। उसे अपने लघु किंतु विपन्न परिवार की चिंता प्रायः रहती ही थी।

–दा, आप तो कह रहे थे राजेश देहली विश्वविद्यालय से एम.कॉम. कर चुका था–

–हां,

–और इस पढ़ाई के लिए अर्थ इत्यादि की व्यवस्था? जितेन निःश्वास भर निचे बिछी घास की ओर देखने लगता है, कुछ सोच नयनों में भी उभरने लगी। वह कहता है–

ऐसे ही प्रश्न मैने सत्यपाल से किए थे। कहने लगा– राजेष आर्थिक दृष्टि से अधिक सुखी नहीं था, परंतु कभी उसने अनुभव नहीं होने यिा कि उसे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति की चिंता है। वह सुखी और संपन्न सा दिखता था, हां कभी–कभी अनायास उद्भ्रांत सा हो आता था, अपने–आप से ऊब

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जाता और फिर कई–कई दिन किसी से बात नहीं करता था। रोहतक में उस के पुर्खों की थोड़ी सी भूमि है, उसी की देख–रेख से मां और छोटी बहन का खर्च चलता था, और स्वयं वह–

जितेन कहते–कहते रूक जाता है, दलीप तिरछी आंखों से जितेन के मस्तक पर गिर रही सुनहरी लटों की ओर देखता है–

–वह प्राइवेट संस्थाओं में काम करके अपना निर्वाह जुटा लेता था।''8

उपन्यास 'मृगतृश्णा' में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार निर्धनता व्यक्ति को तोड़ देती है और निर्धन व्यक्ति को कुछ भी करने पर मजबूर कर देती है–

ठोक उसी समय उसे बाहर बरामदे में शोर गुल सुनाई दिया। कोई गला फाड़–फाड़ कर चिल्ला रहा था।

'हां–हां, मैंने छुरा मारकर उसका खून कर दिया। मेरे बच्चे भूखों मर रहे थे। उस हरामजादे की दुकान पर दो महीने काम किया। भीख नहीं मांग रहा था। साले से साफ इन्कार कर दिया। मेरी मजदूरी। मेरे पसीने की कमाई वह दलाल का बच्चा हड़प कर जाना चाहता था....'

'तो तुमने खून किया है.....लगा दो मुझे फांसी.... ।''9

डॉ. मान द्वारा रचित उपन्यास 'दीमक और दायरे' उपन्यास में इसी विद्रुपता का चित्रण किया गया है–

''कुछ क्षणों तक वह बाल सिंह और माधवी के दुःखी जीवन के बारे में सोचता रहा। सहसा द्वारपर आवाज हुई, उसने घूम कर देखा। भूमि की ओर मस्तक झुकाए माधवी उसके समीप थी। इस समय हरपाल से आंख मिलाकर बात करने का साहस उसमें नहीं रहा था। बेचारी अपनी निर्धनता के बोझ से दबी जा रही थी। एक तो रूप का भार–और दूसरे आत्म–गौरव की रक्षा का प्रश्न–हरपाल ने उसके स्निग्ध पलकों को तरल कपोल प्रदेश से अनुमान लगा लिया कि वह आंसू बहाकर आ रही है। उसकी गति में पहले सा विश्वास और स्थिरता नहीं थी, परंतु ऐसे दिन तो माध्वी के जीवन का अंग बन चुके थ। अपने अतिथि के सामने तो वह अपनी निर्धनता का नाटक नही खेल सकती थी। परिस्थिति को संभालने के प्रयास में उसने कह ही दिया, '' ओह, मैं तो भूल ही गई। आपके लिए अभी दूध गर्म करना है।''10

प्रस्तुत उपन्यास में माधवी कंवर साहब से कहती है कि वह उनकी निर्धनता का उपहास न उड़ाए–

उसे ऐसा लगा कि लंपट व्यक्ति ने उसके वक्ष पर पड़ा महीन वस्त्र चिथड़े–चिथड़े करके उड़ा दिया है। अपनी लुटती लाज को बचाने के लिए जैसे कोई अबला चीत्कार कर उठती है, वैसे ही मर्म–भेदी स्वर में माधवी चीख उठी, '' भगवान के लिए हमारी निर्धनता का इस प्रकार उपहास मत उड़ाइए– घर आया अतिथि तो परमेश्वर होता है। अतिथि के लिए तो हम अपने प्राण तक न्योछावर कर देते हैं फिर आप, '' माधवी का स्वर अस्थिर हो गया उसका शरीर शुष्क पत्ते की भांति कांप सा गया। भाव विहल होकर वह हरपाल के पैरों में गिर पड़ी, भर्राए कंठ से बोली, ''कुंवर साहब, आप बड़े आदमी हैं। ये नोट आपके लिए चंद सिक्कों सा महत्व रखते हैं। परंतु हम गरीबों के पास अहं और आत्म–सम्मान ही तो है जो हमारी पूंजी कहलाते हैं, आप इन्हें भी लूट लेना चाहते हैं, परंतु क्यों?''11

डॉ. मान ने अपने उपन्यास 'सिमटता सागर' में इंदिरा गांधी द्वारा दिए गए नारे 'गरीबी हटाओ' की सार्थकता का चित्रण मि. मुंझाल के माध्यम से किया है–

''मुंझाल साहब, कुछ भी हो, आपकी अपरोच निगेटिव है।''

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''तो इंदिरा जी की 'गरीबी हटाओ' क्या है? गांधी जी का अहिंसावाद क्या है? 'निगेटिव' और पॉजीटिव' क्या दृष्टिकोण का ही भेद नहीं है? जो सम है क्या दूसरे पहलू से विषम नहीं हो जाता.....।''

''लेकिन गरीबी हटाओ के पीछे उदात भावना है।''

''वाह रे पीर!''

मुंझाल साहब उधार खाए बैठे थे।''12

'अजय बाबू, आपके होते, हम गरीबों की मजूरी मारी जाए। यह तो पाप होगा। इधर मैंने दो महीने सेठ जी के घर बर्तन धोए, खाना बनाया। आज मुझे एक महीने की बेगार देकर उन्होंने निकाल दिया, माई–बाप, आप तो अखबार छापे हो। यह कौन सा इंसाफ हुआ–?'

अजय ने उसको ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछा,

'तुम किस सेठ जी की बात करते हो?'

'वाह अजय बाबू आप भी कमाल करते हो। मुझे नहीं पहचाना, मैं हूं रामजस, वो सेठ रेखा के पिता, उनकी बात करता हूं। भैया इन हाथों ने तो आप को खाना खिलाया है–'

कुछ ही क्षणों में अजय को सारी स्थिति का ज्ञान हो गया। रामजस को उसने अपने एक मित्र की चिट्ठी भी लेकर दी थी। परंतु सेठ कांता प्रसाद तो बहुत बड़े आदमी हैं। इस बेचारे के साथ इस तरह का व्यवहार–' अजय ने कुछ सोचकर कहा,

'पंरतु उन्होंने तुम्हें नौकरी से अलग करते हुए कुछ कहा तो होगा?'

'नहीं भैया, का कहना। सुसरा उनका मैनेजर कोई अपना आदमी रखने को बोले–'

'ओ, अब समझा–' अजय ने कुर्सी पर पीठ टेककर कहा,

'परंतु उन्होंने तुम्हारी तनख्वाह क्यों नहीं दी–'

रामजस कुछ गिड़गिड़ाकर बोला,

'उनकी मर्जी ठहरी। हम गरीबन की कौन सुने। कहते थे तुमने जो बर्तन तोड़े उनके पैसे तुम्हारी तनख्वाह से पूरे हो गए हैं–''

गरीबों के निर्धनता केवल आश्रय ही नहीं बल्कि एक विवषता भी है जो मानव को हैवान बना देती है। इसी कारण वह नैतिक, सामाजिक आदि मूल्यों को ताक पर रख अपना तथा अपने परिवार की भूख मिटाने के लिए धन कमाना चाहता है। यह कमाई पाप की कमाई कहलाती है।

निश्कर्श

अतः निर्धनता उस दुःस्वप्न की तरह जो हमें दिन–रात चैन नहीं लेने देता। वह निर्धनता की बीमारी दूर करने के लिए या तो आत्महत्या कर लेता है या आर्थिक मूल्यों को ताक पर रखकर बुरे कार्य करने लग जाता है। आज मेहनत के बल पर ही इस बुराई को दूर किया जा सकता है। निर्धनता को दूर करने के लिए सरकार को रोजगार के अधिक से अधिक अवसर देने चाहिए व धनी वर्ग को भी चाहिए कि वह गरीब व असहाय परिवारों की आर्थिक मदद करे ताकि इस निर्धनता नामक बीमारी को दूर हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1डॉ. नगद्र (सम्पा.), मानविकी पारिभाषिक कोश, पृ0 166
2 डॉ. ज्ञान सिंह मान, जलते कलश, पृ0 18

3 डॉ. ज्ञान सिंह मान, खुलते बंद सीप, पृ0 76
4 डॉ. ज्ञान सिंह मान, खुलते बंद सीप, पृ0 68.69
5 डॉ. ज्ञान सिंह मान, मृग तृष्णा, पृ0 129
6 डॉ. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, सामाजिक विघटन, पृ0 287.288
7 डॉ. सरिता वशिष्ठ, युगबोध और हिंदी नाटक, पृ0 225
8 डॉ. ज्ञान सिंह मान, खुलते बंद सीप, पृ0 80
9 डॉ. ज्ञान सिंह मान, मृग तृष्णा, पृ0 128
10 डॉ. ज्ञान सिंह मान, दीमक और दायरे, पृ0 44
11 डॉ. ज्ञान सिंह मान, दीमक और दायरे, पृ0 45
12 डॉ. ज्ञान सिंह मान, सिमटता सागर, पृ0 93